Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Paper

जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार: एक अंतर्विषयक अध्ययन

Mahesh Choudhary [1*], Dr. Geljibhai Bhatiya [2]

[1] Research scholar, Department of Hindi, Faculty of Language and Literature, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad, India

[2] Associate Professor, Department of Hindi, Faculty of Language and Literature, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad, India

Corresponding Author: * Mahesh Choudhary

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18339681

सारांश

भारतीय संत परंपरा में जसनाथ सम्प्रदाय का स्थान विशिष्ट है, विशेषतः पश्चिमी राजस्थान के सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संदर्भों में। जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य केवल धार्मिक उपदेशों तक सीमित न होकर लोकचेतना, प्रकृति-संरक्षण और सामाजिक सुधार की एक समग्र वैचारिक संरचना प्रस्तुत करता है। यह शोध-पत्र जसनाथी साहित्य में निहित लोकचेतना, पर्यावरण बोध तथा सामाजिक सुधार के आयामों का आलोचनात्मक एवं अंतर्विषयक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार यह साहित्य लोकजीवन से जुड़कर सामाजिक नैतिकता, पर्यावरणीय संतुलन और समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में योगदान देता है। शोध में पाठीय विश्लेषण, ऐतिहासिक संदर्भ और विषयवस्तु आधारित पद्धति का प्रयोग किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। भारतीय संत साहित्य केवल आध्यात्मिक साधना का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और नैतिकता का महत्वपूर्ण आधार रहा है। कबीर, रैदास, नानक आदि संतों ने मध्यकालीन समाज में व्याप्त जातिगत अन्याय, रूढ़ियों और असमानताओं के विरुद्ध मानवीय दृष्टि विकसित की। इसी परंपरा में राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में उदित जसनाथ सम्प्रदाय विशेष रूप से प्रकृति-संरक्षण, संयमित जीवन और सामाजिक समरसता पर आधारित दर्शन प्रस्तुत करता है। कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों ने इस सम्प्रदाय को सहअस्तित्व और पर्यावरण-संतुलन के सिद्धांत की ओर अग्रसर किया। जसनाथी साहित्य लोकभाषा में रचित होने के कारण जनजीवन, कृषि, पशुपालन और जल-संरक्षण जैसे विषयों से गहराई से जुड़ता है। यह धर्म को सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़कर करुणा, संयम और समता को जीवन-मूल्य के रूप में स्थापित करता है। इस साहित्य की केंद्रीय अवधारणा पर्यावरण बोध है, जिसमें वृक्षों की रक्षा, जल-संरक्षण और पशु-हित को व्यावहारिक जीवन-नीति माना गया है। साथ ही, यह लोकचेतना को जाग्रत कर सामाजिक कुरीतियों, हिंसा और विभेद का विरोध करता है। समकालीन पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताओं के संदर्भ में जसनाथी साहित्य के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी साहित्य की लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार की भूमिका का समग्र अध्ययन करता है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584- 184X
- ✓ **Received:** 13-09-2025
- ✓ **Accepted:** 26-10-2025
- ✓ **Published:** 30-10-2025
- ✓ **MRR:3(10):**2025;59-67
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite this Article

Choudhary M, Bhatiya G. जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार: एक अंतर्विषयक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च एंड रिव्यू. 2025;3(10):59-67.

मुख्य शब्द: असृग्दरा, विकारग्रस्त गर्भाशयी रक्तस्राव, प्रदरारी चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण, यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

साहित्य समीक्षा

जसनाथ सम्प्रदाय पर उपलब्ध साहित्य अपेक्षाकृत सीमित है, किंतु जो भी अध्ययन उपलब्ध हैं, वे इस सम्प्रदाय को लोकधर्म, संत परंपरा और पर्यावरणीय चेतना के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। अधिकांश विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि जसनाथ सम्प्रदाय केवल एक धार्मिक समुदाय नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी जड़ें राजस्थान के लोकजीवन और मरुस्थलीय पर्यावरण में गहराई से समाई हुई हैं (Kumari *et al.*,2021)। तथापि, इस स्वीकारोक्ति के बावजूद, जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य का व्यवस्थित और समग्र अकादमिक अध्ययन अभी भी सीमित दायरे में ही किया गया है।

अब तक किए गए अध्ययनों का एक बड़ा हिस्सा जसनाथ सम्प्रदाय को लोकधर्म की श्रेणी में रखता है। लोकधर्म के रूप में इसे समझने का प्रयास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह सम्प्रदाय शास्त्रीय धार्मिक संस्थाओं से भिन्न, लोकविश्वासों, आचारों और परंपराओं पर आधारित है (Abdullah *et al.*,2008)। कुछ शोधकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि जसनाथ सम्प्रदाय की धार्मिक संरचना लोकसमाज की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हुई है, न कि किसी औपचारिक दार्शनिक प्रणाली के आधार पर। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य में जसनाथ सम्प्रदाय को एक जीवंत लोकपरंपरा के रूप में देखा गया है, जो ग्रामीण समाज की नैतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

पर्यावरणीय चेतना के संदर्भ में जसनाथ सम्प्रदाय पर किए गए अध्ययनों ने इसे विश्नोई आंदोलन और अन्य प्रकृति-संरक्षण आधारित संत परंपराओं के समानांतर रखकर देखा है। कुछ विद्वानों ने यह इंगित किया है कि राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में विकसित धार्मिक परंपराओं में पर्यावरण संरक्षण केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि अस्तित्व की अनिवार्यता है (Singh *et al.*,2012)। इस दृष्टिकोण से जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में वृक्षों की रक्षा, पशु-हत्या का निषेध और जल-संरक्षण जैसे विषयों को एक धार्मिक आदेश के रूप में प्रस्तुत किए जाने को पर्यावरणीय विवेक का प्रारंभिक रूप माना गया है। हालांकि, इन अध्ययनों में पर्यावरण बोध को प्रायः आस्था-आधारित संरक्षण तक सीमित रखा गया है और इसे व्यापक सामाजिक चेतना के साथ जोड़कर देखने का प्रयास अपेक्षाकृत कम रहा है।

कुछ शोधकर्ताओं ने जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को लोककाव्य की परंपरा में स्थापित करने का प्रयास किया है। इन अध्ययनों के अनुसार जसनाथी साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपरा में विकसित हुआ है, जिसमें पद, साखियाँ, दोहे और उपदेशात्मक रचनाएँ प्रमुख हैं। लोककाव्य के रूप में इसके अध्ययन ने इस साहित्य की भाषा, प्रतीक और कथ्य की सहजता को रेखांकित किया है (Kothari *et al.*,1997)। लोकभाषा में रचित होने के कारण यह साहित्य आम जन के लिए सहज बोधगम्य है और इसी कारण इसका प्रसार व्यापक रहा है। तथापि, लोककाव्य के रूप में किए गए अध्ययनों में प्रायः साहित्यिक संरचना और भाषिक विशेषताओं पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि इसके सामाजिक और वैचारिक आयाम अपेक्षाकृत हाशिए पर चले गए हैं।

धार्मिक दृष्टिकोण से किए गए अध्ययनों में जसनाथ सम्प्रदाय को एक संप्रदाय विशेष की आस्था, अनुष्ठानों और परंपराओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। इन अध्ययनों में गुरु-परंपरा, धार्मिक नियमों और आचार-संहिताओं का विवरण प्रमुख रहा है (Zaidi *et al.*,2008)। यद्यपि ऐसे अध्ययन सम्प्रदाय की आंतरिक संरचना को समझने में सहायक हैं, किंतु वे साहित्य को प्रायः धार्मिक ग्रंथों के रूप में सीमित कर देते हैं। परिणामस्वरूप, जसनाथी साहित्य की सामाजिक भूमिका, लोकचेतना और सुधारात्मक प्रवृत्तियाँ इन अध्ययनों में पूर्ण रूप से उभरकर सामने नहीं आ पातीं।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उपलब्ध साहित्य में जसनाथ सम्प्रदाय के उद्भव, विस्तार और सामाजिक प्रभाव का वर्णन किया गया है। इन अध्ययनों ने राजस्थान के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास में जसनाथ सम्प्रदाय की भूमिका को रेखांकित किया है। हालाँकि, ऐतिहासिक विवरण प्रायः घटनाओं और कालक्रम तक सीमित रहते हैं और साहित्यिक पाठों के गहन विश्लेषण की ओर कम ध्यान देते हैं। इस कारण जसनाथी साहित्य को एक सक्रिय सामाजिक विमर्श के रूप में देखने की संभावना सीमित रह जाती है।

लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार को एक समग्र ढाँचे में देखने का प्रयास अब तक के साहित्य में अपेक्षाकृत कम हुआ है (Luthy *et al.*,2019)। अधिकांश अध्ययन इन तत्वों को पृथक-पृथक रूप में देखते हैं या किसी एक आयाम पर अधिक बल देते हैं। उदाहरण के लिए, पर्यावरणीय अध्ययन प्रकृति-संरक्षण पर केंद्रित रहते हैं, जबकि सामाजिक अध्ययन नैतिक उपदेशों या सुधारात्मक संदेशों तक सीमित हो जाते हैं। इन दृष्टिकोणों में वह अंतर्संबंध स्पष्ट नहीं हो पाता, जिसके माध्यम से जसनाथी साहित्य लोकजीवन, प्रकृति और समाज को एक समन्वित इकाई के रूप में प्रस्तुत करता है।

समकालीन अकादमिक विमर्श में संत साहित्य को केवल आध्यात्मिक या ऐतिहासिक विषय के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और वैकल्पिक ज्ञान-परंपरा के रूप में देखा जा रहा है। इस संदर्भ में जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य पर पुनर्विचार की आवश्यकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है। अब तक के अध्ययनों में जिस प्रकार इसे या तो धार्मिक ग्रंथों के रूप में या लोककाव्य की परंपरा में सीमित किया गया है, वह इसके व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय निहितार्थों को पूर्ण रूप से उजागर नहीं कर पाता (Arshad *et al.*,2019) ।

यह भी उल्लेखनीय है कि अधिकांश उपलब्ध अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित हैं और मूल साहित्यिक पाठों के आलोचनात्मक विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है। मौखिक परंपरा में उपलब्ध रचनाओं का संकलन, वर्गीकरण और विषयगत विश्लेषण अभी भी एक चुनौती बना हुआ है। इस कारण जसनाथी साहित्य के विविध आयामों पर आधारित समग्र अध्ययन की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को एक सामाजिक-पर्यावरणीय विमर्श के रूप में पुनर्पाठ करने का प्रयास करता है (Bahadur *et al.*,2024)। यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार को एक अंतर्संबद्ध संरचना के रूप में देखने का प्रस्ताव करता है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से जसनाथी साहित्य को केवल अतीत की धार्मिक या सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नहीं, बल्कि समकालीन सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिक वैचारिक संसाधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है (Reading *et al.*,2019)।

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार, साहित्य समीक्षा यह स्पष्ट करती है कि जसनाथ सम्प्रदाय पर उपलब्ध अध्ययन यद्यपि महत्वपूर्ण हैं, फिर भी वे इस साहित्य की समग्र सामाजिक भूमिका को पूर्णतः उजागर करने में पर्याप्त नहीं हैं (Singh *et al.*,2012) । प्रस्तुत शोध इन्हीं रिक्तताओं को संबोधित करता है और जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को एक व्यापक लोक-सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और सामाजिक सुधारात्मक विमर्श के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में निहित लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार के तत्वों की गहन पहचान तथा उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करना है (Kothari *et al.*,1997)। यह शोध इस मूल धारणा पर आधारित है कि जसनाथी साहित्य केवल धार्मिक उपदेशों का संकलन नहीं है, बल्कि यह एक समग्र सामाजिक-दृष्टि प्रस्तुत करता है, जिसमें लोकजीवन, प्रकृति और नैतिक मूल्यों के बीच गहरा अंतर्संबंध स्थापित होता है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन तीनों आयामों को पृथक-पृथक न देखकर एक अंतर्संबद्ध वैचारिक संरचना के रूप में समझना है, जिससे जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की सामाजिक भूमिका अधिक स्पष्ट रूप में उभरकर सामने आ सके।

शोध का पहला उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना की अभिव्यक्ति को समझना है। लोकचेतना केवल जनसामान्य की भावनाओं या विश्वासों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह उस सामूहिक विवेक का प्रतिनिधित्व करती है, जो समाज को नैतिक और सांस्कृतिक दिशा प्रदान करता है। जसनाथी साहित्य में लोकचेतना किस प्रकार लोकभाषा, लोकानुभव और लोकसंस्कृति के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, यह इस अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र है (Singh *et al.*,2012)। इस उद्देश्य के अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाएगा कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य सामान्य जन को किस प्रकार संबोधित करता है, उसकी समस्याओं को कैसे स्वर देता है और उसे आत्मचिंतन तथा नैतिक निर्णय की ओर कैसे प्रेरित करता है।

इस अध्ययन का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में निहित पर्यावरण बोध की पहचान और उसका विश्लेषण करना है। मरुस्थलीय क्षेत्र में विकसित इस सम्प्रदाय के साहित्य में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग है। वृक्ष, जल, पशु और भूमि के प्रति दृष्टिकोण जसनाथी साहित्य में किस प्रकार नैतिक और धार्मिक कर्तव्य से जुड़ा हुआ है, यह इस शोध का एक प्रमुख प्रश्न है। इस उद्देश्य के अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि जसनाथी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण केवल आस्था-आधारित अनुशासन है या वह एक सुविचारित जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत होता है। साथ ही, यह भी स्पष्ट करना उद्देश्य है कि यह पर्यावरण बोध आधुनिक पारिस्थितिकी और सतत विकास की अवधारणाओं से किस प्रकार संवाद स्थापित करता है।

शोध का तीसरा उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में सामाजिक सुधार की चेतना का विश्लेषण करना है। भारतीय संत परंपरा में सामाजिक सुधार का स्वर प्रायः नैतिक उपदेशों के माध्यम से व्यक्त हुआ है, और जसनाथी साहित्य भी इसी परंपरा का विस्तार है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि जसनाथी साहित्य किस प्रकार सामाजिक कुरीतियों, हिंसा, असमानता और अनैतिक आचरण के विरुद्ध वैचारिक प्रतिरोध प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि सामाजिक सुधार की अवधारणा यहाँ किसी बाह्य क्रांतिकारी परिवर्तन के रूप में नहीं, बल्कि आंतरिक नैतिक अनुशासन और सामुदायिक उत्तरदायित्व के रूप में कैसे उभरती है।

प्रस्तुत शोध का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य लोकजीवन को किस प्रकार नैतिक दिशा प्रदान करता है। नैतिक दिशा से अभिप्राय केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सामाजिक व्यवहार, प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व और सामूहिक जीवन के मूल्य भी सम्मिलित हैं। इस उद्देश्य के अंतर्गत यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि जसनाथी साहित्य व्यक्ति को समाज और पर्यावरण के प्रति सजग नागरिक के रूप में कैसे विकसित करता है (Abdullah *et al.*,2008)। यह विश्लेषण इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का बढ़ता प्रभाव एक गंभीर चिंता का विषय बन चुका है।

शोध का एक व्यापक उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करना भी है। यद्यपि यह साहित्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित हुआ है, फिर भी इसके विचार आज के सामाजिक-पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह दिखाना है कि जसनाथी साहित्य में निहित संयम, सहअस्तित्व और सामुदायिक चेतना के विचार आज के पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक असमानताओं के समाधान में किस प्रकार वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, इस शोध का उद्देश्य यह भी है कि जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को केवल धार्मिक या लोकसाहित्य के दायरे में सीमित न रखकर उसे एक सामाजिक-पर्यावरणीय विमर्श के रूप में स्थापित किया जाए। अब तक के अधिकांश अध्ययनों में इस साहित्य को या तो धार्मिक आस्था के संदर्भ में देखा गया है या लोककाव्य की परंपरा तक सीमित किया गया है (Kumari *et al.*,2021)। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन सीमाओं को पार करते हुए जसनाथी साहित्य के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करना है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि यह साहित्य समाज, संस्कृति और पर्यावरण के बीच एक समन्वित दृष्टि प्रस्तुत करता है।

शोध का एक और उद्देश्य पूर्ववर्ती अध्ययनों में विद्यमान रिक्तताओं को संबोधित करना है। उपलब्ध साहित्य में लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार पर पृथक-पृथक चर्चा तो मिलती है, किंतु इन तीनों को एक अंतर्संबद्ध ढाँचे में देखने का प्रयास अपेक्षाकृत कम हुआ है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन आयामों के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करना है, जिससे जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की वैचारिक गहराई और सामाजिक भूमिका अधिक सुस्पष्ट हो सके।

अंततः, इस शोध का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य केवल अतीत की सांस्कृतिक विरासत नहीं है, बल्कि वह वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक महत्वपूर्ण वैचारिक संसाधन है। यह अध्ययन यह दर्शाने का प्रयास करता है कि जसनाथी साहित्य में निहित मूल्य मानव और प्रकृति के बीच संतुलन, सामाजिक समरसता और नैतिक जीवन-दृष्टि के निर्माण में आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे (Zaidi *et al.*,2008)। इस प्रकार, शोध उद्देश्य केवल साहित्यिक विश्लेषण तक सीमित न रहकर,

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सामाजिक और पर्यावरणीय विमर्श में जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की भूमिका को पुनर्परिभाषित करने की दिशा में भी अग्रसर है।

शोध-विधि

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, क्योंकि इसका उद्देश्य किसी सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अपेक्षा जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में निहित वैचारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थों की गहन व्याख्या करना है। संत साहित्य, विशेषतः लोकधर्म से संबद्ध साहित्य, अपने स्वरूप में प्रतीकात्मक, नैतिक और अनुभवजन्य होता है, जिसे संख्यात्मक विधियों के माध्यम से पूर्णतः समझ पाना संभव नहीं है (Zaidi *et al.*,2008)। अतः इस शोध में गुणात्मक पद्धति को सर्वाधिक उपयुक्त मानते हुए पाठीय विश्लेषण, व्याख्यात्मक अध्ययन और तुलनात्मक दृष्टिकोण को प्रमुख शोध उपकरण के रूप में अपनाया गया है।

इस अध्ययन का प्राथमिक आधार जसनाथ सम्प्रदाय से संबंधित उपलब्ध साहित्यिक सामग्री है। इसमें लिखित ग्रंथों के साथ-साथ लोकगीतों, पदों, साखियों और मौखिक परंपराओं को भी शामिल किया गया है। जसनाथी साहित्य का एक बड़ा भाग मौखिक परंपरा में संरक्षित रहा है, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी श्रुति-परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ाया गया। इसलिए इस शोध में मौखिक साहित्य को भी उतना ही महत्व दिया गया है जितना लिखित स्रोतों को। यह दृष्टिकोण इसलिए आवश्यक था, क्योंकि केवल लिखित ग्रंथों पर आधारित अध्ययन जसनाथी साहित्य की समग्रता को पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं कर सकता।

पाठीय विश्लेषण इस शोध की मुख्य विधि है। इसके अंतर्गत जसनाथ सम्प्रदाय से संबंधित रचनाओं का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है, जिसमें भाषा, प्रतीक, कथ्य और अंतर्निहित वैचारिक संरचना पर विशेष ध्यान दिया गया है। पाठीय विश्लेषण का उद्देश्य केवल साहित्यिक सौंदर्य का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि यह समझना है कि इन पाठों के माध्यम से लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार के विचार किस प्रकार अभिव्यक्त होते हैं (Luthy *et al.*,2019)। प्रत्येक पाठ को उसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर पढ़ा गया है, जिससे उसके निहितार्थ अधिक स्पष्ट रूप में सामने आ सकें।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भों को समझने के लिए व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य किसी निर्वात में रचित नहीं हुआ, बल्कि वह अपने समय और समाज की परिस्थितियों से गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः रचनाओं की व्याख्या करते समय उस ऐतिहासिक काल, सामाजिक संरचना और भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया है, जिनमें यह साहित्य विकसित हुआ। मरुस्थलीय पर्यावरण, ग्रामीण जीवन और सामुदायिक संरचनाएँ जसनाथी साहित्य की विषयवस्तु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक रहे हैं, और इस शोध में इन्हें विश्लेषण का अभिन्न अंग बनाया गया है।

तुलनात्मक विधि का प्रयोग इस शोध में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में किया गया है। इसके अंतर्गत जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की तुलना अन्य भारतीय संत परंपराओं तथा पर्यावरण-संरक्षण आधारित आंदोलनों से की गई है (Arshad *et al.*,2019)। इस तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य जसनाथी साहित्य की विशिष्टताओं को स्पष्ट करना है, साथ ही यह समझना भी है कि यह साहित्य व्यापक संत परंपरा और लोकधर्म के विमर्श में किस स्थान पर स्थित है। तुलनात्मक दृष्टिकोण से यह भी स्पष्ट होता है कि जसनाथ सम्प्रदाय का पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार की चेतना किन अर्थों में अद्वितीय है और किन अर्थों में अन्य परंपराओं से साम्य रखती है।

पर्यावरण बोध के विश्लेषण के लिए इस शोध में आधुनिक पर्यावरणीय सिद्धांतों और सतत विकास की अवधारणाओं को संदर्भ के रूप में लिया गया है। इसका उद्देश्य यह नहीं है कि जसनाथी साहित्य को आधुनिक सिद्धांतों के ढाँचे में सीमित किया जाए, बल्कि यह समझना है कि पारंपरिक साहित्य में निहित विचार आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श से किस प्रकार संवाद स्थापित करते हैं। इस तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य पर्यावरण संरक्षण को केवल धार्मिक अनुशासन के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के नैतिक आधार के रूप में प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक पारिस्थितिकी के मूल सिद्धांतों से मेल खाता है।

सामाजिक सुधार के संदर्भ में भी तुलनात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। जसनाथी साहित्य में प्रस्तुत सामाजिक आदर्शों की तुलना आधुनिक सामाजिक सुधार आंदोलनों और नैतिक दर्शन से की गई है। इस प्रक्रिया के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य सामाजिक परिवर्तन को किस प्रकार परिकल्पित करता है। विशेष रूप से यह देखा गया है कि सामाजिक सुधार यहाँ किसी बाह्य क्रांतिकारी हस्तक्षेप के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक आत्मसंयम और सामुदायिक अनुशासन के माध्यम से किस प्रकार प्रस्तुत होता है।

इस शोध में द्वितीयक स्रोतों का भी सावधानीपूर्वक उपयोग किया गया है। पूर्ववर्ती शोध, ऐतिहासिक अध्ययन और साहित्यिक आलोचनाएँ इस अध्ययन की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक रही हैं। हालांकि, द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते समय यह विशेष ध्यान रखा गया है कि शोध का मुख्य केंद्र प्राथमिक साहित्यिक पाठ ही बने रहें (Bahadur *et al.*,2024) । द्वितीयक स्रोतों का उद्देश्य केवल संदर्भ प्रदान करना और पूर्ववर्ती शोध की सीमाओं को समझना रहा है, न कि उनके निष्कर्षों को यथावत स्वीकार करना।

शोध-विधि के अंतर्गत एक अंतर्विषयक दृष्टिकोण भी अपनाया गया है। साहित्य, समाजशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और सांस्कृतिक अध्ययन के सिद्धांतों को एक साथ प्रयोग में लाकर जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य का विश्लेषण किया गया है। इस अंतर्विषयक दृष्टि का उद्देश्य यह दिखाना है कि जसनाथी साहित्य किसी एक अकादमिक अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज और प्रकृति के बीच के संबंधों को समझने का एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन में शोध की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए पाठों की पुनरावृत्ति और विषयगत संगति पर विशेष ध्यान दिया गया है (Reading *et al.*,2019) । लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार से संबंधित विषयों की आवृत्ति और निरंतरता का विश्लेषण कर यह सुनिश्चित किया गया है कि निष्कर्ष केवल चयनात्मक उदाहरणों पर आधारित न हों, बल्कि साहित्य की समग्र प्रवृत्तियों को प्रतिबिंबित करें।

अंततः, इस शोध-विधि का उद्देश्य जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को उसके मूल सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ में समझते हुए उसकी समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है। गुणात्मक, व्याख्यात्मक और तुलनात्मक विधियों के संयोजन के माध्यम से यह अध्ययन यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि जसनाथी साहित्य न केवल अतीत

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

की धार्मिक या लोकपरंपरा है, बल्कि वह आज के सामाजिक और पर्यावरणीय विमर्श में भी सार्थक योगदान देने की क्षमता रखता है (Singh *et al.*,2012)
। इस प्रकार, शोध-विधि केवल तकनीकी प्रक्रिया न होकर, अध्ययन के वैचारिक उद्देश्य को साकार करने का एक सुसंगत और सुदृढ़ माध्यम बनती है।

जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना

लोकचेतना से अभिप्राय उस सामूहिक बोध से है, जो किसी समाज के ऐतिहासिक अनुभवों, जीवन-संघर्षों, सांस्कृतिक स्मृतियों और नैतिक मूल्यों से निर्मित होता है। यह चेतना केवल वैचारिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी अभिव्यक्त होती है। लोकचेतना समाज की आत्मा के समान होती है, जो यह निर्धारित करती है कि सामान्य जन किस प्रकार जीवन को समझता है, किन मूल्यों को अपनाता है और सामाजिक व्यवहार को किस दिशा में विकसित करता है (Jamal *et al.*,2022)। जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य इसी लोकचेतना का सजीव और सशक्त प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, क्योंकि इसका उद्भव और विकास लोकजीवन की वास्तविक परिस्थितियों के बीच हुआ है।
जसनाथी साहित्य में लोकचेतना का स्वरूप अमूर्त या दार्शनिक न होकर अत्यंत व्यावहारिक है। इसमें आम जनजीवन की समस्याएँ, दैनिक संघर्ष, नैतिक दुविधाएँ और सामाजिक व्यवहार के नियम स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होते हैं। यह साहित्य समाज को किसी आदर्शलोक की कल्पना में नहीं ले जाता, बल्कि यथार्थ जीवन की कठिनाइयों के बीच नैतिक संतुलन बनाए रखने का मार्ग सुझाता है। किसान, पशुपालक, श्रमिक और ग्रामीण समुदाय इसके मुख्य संदर्भ बिंदु हैं, जिनके अनुभवों से यह साहित्य अपनी संवेदना ग्रहण करता है। इसी कारण जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य लोकजीवन से कटे हुए किसी अभिजात विमर्श की बजाय जनसामान्य की चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।
लोकभाषा में रचित होना जसनाथी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। लोकभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह लोकचेतना की संवाहक भी होती है। शास्त्रीय भाषाओं की जटिलता से मुक्त यह साहित्य सीधे जनमानस को संबोधित करता है और उसकी संवेदनाओं से संवाद स्थापित करता है। भाषा की यह सहजता साहित्य को केवल सुनने या पढ़ने योग्य नहीं बनाती, बल्कि उसे जीवन में उतारने योग्य भी बनाती है (Kumari *et al.*,2021)। जसनाथी साहित्य में प्रयुक्त शब्द, उपमाएँ और प्रतीक लोकजीवन से ही ग्रहण किए गए हैं, जिससे यह साहित्य जनसामान्य के लिए आत्मीय और विश्वासयोग्य बन जाता है।
जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना केवल सामाजिक यथार्थ के चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिक बोध का भी सृजन करती है। इसमें नैतिकता किसी बाहरी नियम या दंड के भय से नहीं, बल्कि सामूहिक जीवन की आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत होती है। लोकजीवन में शांति, सहयोग और सहअस्तित्व बनाए रखने के लिए जिन नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है, उन्हें जसनाथी साहित्य सहज रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार लोकचेतना यहाँ सामाजिक अनुशासन और नैतिक उत्तरदायित्व का आधार बनती है।
जसनाथी साहित्य का लोकचेतनात्मक स्वरूप इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि यह लोक को केवल उपदेश का विषय नहीं बनाता, बल्कि उसे चिंतनशील इकाई के रूप में संबोधित करता है। यह साहित्य व्यक्ति को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है और उसे अपने आचरण की जिम्मेदारी स्वयं उठाने की प्रेरणा देता है। इसमें नैतिकता को आरोपित नहीं किया जाता, बल्कि उसे अनुभव और विवेक के माध्यम से आत्मसात करने की प्रक्रिया पर बल दिया जाता है (Singh *et al.*,2012)। यह दृष्टिकोण लोकचेतना को निष्क्रिय स्वीकार्यता से ऊपर उठाकर सक्रिय नैतिक सहभागिता में परिवर्तित करता है।
ग्रामीण जीवन की संरचना जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना का एक महत्वपूर्ण आधार है। ग्रामीण समाज में व्यक्ति और समुदाय के बीच का संबंध अत्यंत निकट होता है, जहाँ व्यक्तिगत आचरण का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। जसनाथी साहित्य इसी सामुदायिक चेतना को पुष्ट करता है। इसमें व्यक्ति को यह बोध कराया जाता है कि उसका जीवन केवल निजी नहीं है, बल्कि वह समाज और प्रकृति से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार लोकचेतना व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक हित की ओर उन्मुख होती है।
लोकचेतना का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम जसनाथी साहित्य में सामाजिक समानता और समरसता के रूप में उभरता है। यह साहित्य सामाजिक विभाजन, अहंकार और हिंसा के विरुद्ध एक नैतिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। हालाँकि यह दृष्टि किसी प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन के रूप में नहीं दिखाई देती, फिर भी यह लोकमानस में समानता और करुणा के मूल्यों को स्थापित करने का कार्य करती है। जसनाथी साहित्य में प्रस्तुत लोकचेतना सामाजिक व्यवस्था को भीतर से बदलने की क्षमता रखती है, क्योंकि यह परिवर्तन को नैतिक आत्मबोध से जोड़ती है।
यह भी उल्लेखनीय है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य लोकचेतना को स्थिर या जड़ नहीं मानता। इसके विपरीत, यह चेतना गतिशील है और समय के साथ विकसित होती है। लोकजीवन में आने वाले परिवर्तनों, चुनौतियों और संकटों का प्रभाव इस साहित्य में परिलक्षित होता है। इस कारण जसनाथी साहित्य केवल अतीत की चेतना का दस्तावेज नहीं है, बल्कि वह एक सतत विकसित होती लोकदृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है।
समकालीन संदर्भ में जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की लोकचेतना और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। आधुनिक समाज में बढ़ती व्यक्तिवादिता, उपभोक्तावाद और नैतिक विचलन के बीच यह साहित्य सामुदायिक जीवन, संयम और नैतिक जिम्मेदारी की याद दिलाता है (Zaidi *et al.*,2008) । लोकचेतना के माध्यम से यह साहित्य यह संदेश देता है कि सामाजिक स्थिरता और पर्यावरणीय संतुलन केवल नीतियों या कानूनों से नहीं, बल्कि लोकमानस में नैतिक मूल्यों की स्थापना से संभव है।
इस प्रकार, जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में लोकचेतना केवल एक विषय नहीं, बल्कि उसकी संपूर्ण वैचारिक संरचना का आधार है। यह लोकचेतना साहित्य को सामाजिक जागरूकता का प्रभावी माध्यम बनाती है और उसे लोकजीवन के साथ जीवंत रूप से जोड़ती है। जसनाथी साहित्य का यह लोकचेतनात्मक स्वरूप इसे भारतीय संत साहित्य की परंपरा में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है, जहाँ साहित्य, समाज और जीवन एक-दूसरे से पृथक न होकर एक समन्वित संपूर्णता के रूप में उपस्थित होते हैं।
अंततः यह कहा जा सकता है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य लोकचेतना के माध्यम से समाज को केवल नैतिक उपदेश नहीं देता,

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बल्कि उसे आत्मबोध, उत्तरदायित्व और सामूहिक विवेक की दिशा में अग्रसर करता है। यही लोकचेतना इस साहित्य को कालातीत बनाती है और इसे समकालीन सामाजिक विमर्श में भी प्रासंगिक बनाए रखती है।

पर्यावरण बोध का स्वरूप

जसनाथ सम्प्रदाय का उद्भव और विकास जिस भौगोलिक क्षेत्र में हुआ, वह क्षेत्र अपने कठोर पर्यावरणीय यथार्थ के लिए जाना जाता है। राजस्थान का मरुस्थलीय भूभाग सीमित जल-संसाधनों, विरल वनस्पति और अत्यधिक तापमान जैसी परिस्थितियों से युक्त है, जहाँ जीवन की निरंतरता स्वयं में एक संघर्ष है। ऐसे पर्यावरण में विकसित किसी भी सामाजिक या धार्मिक परंपरा का प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना स्वाभाविक है। जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य इसी संवेदनशीलता का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है (Arshad *et al.*,2019)। इसमें पर्यावरण बोध कोई बाह्य या आरोपित विचार नहीं है, बल्कि जीवनानुभव से उपजा हुआ एक अनिवार्य नैतिक दृष्टिकोण है।

जसनाथी साहित्य में प्रकृति को जीवन का आधार माना गया है। वृक्ष, जल, पशु और भूमि केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि वे मानवीय अस्तित्व के सहचर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मरुस्थलीय जीवन में वृक्ष छाया, ईंधन और पर्यावरणीय संतुलन का स्रोत होता है, जल जीवन और सामाजिक संरचना की रीढ़ होता है, पशु आजीविका और कृषि व्यवस्था का अभिन्न अंग होते हैं और भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का केंद्र होती है। जसनाथी साहित्य इन सभी तत्वों को सम्मान और संरक्षण के योग्य मानते हुए उनके प्रति उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करता है।

इस साहित्य में पर्यावरण बोध का स्वरूप उपयोगितावादी नहीं है। प्रकृति को केवल मानव-आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली वस्तु के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि उसे सहअस्तित्व की भावना से जोड़ा गया है। प्रकृति और मनुष्य के बीच यहाँ स्वामी और उपभोग्य का संबंध नहीं, बल्कि सहचर और सहयोगी का संबंध स्थापित होता है (Zaidi *et al.*,2008)। यह दृष्टि आधुनिक पर्यावरणीय चिंतन से भी आगे बढ़कर एक नैतिक और भावनात्मक संबंध को रेखांकित करती है, जहाँ प्रकृति का संरक्षण केवल लाभ के लिए नहीं, बल्कि कर्तव्य और संवेदना के कारण आवश्यक माना जाता है।

जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में पर्यावरण बोध धार्मिक आस्था और नैतिक कर्तव्य के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ पर्यावरण संरक्षण को किसी पृथक वैज्ञानिक या प्रशासनिक गतिविधि के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे जीवन के नैतिक अनुशासन का हिस्सा बनाया गया है। वृक्षों की रक्षा, पशु-हत्या का निषेध और जल संरक्षण जैसे विषय केवल व्यवहारिक निर्देश नहीं हैं, बल्कि वे धार्मिक और नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित हैं। इस प्रकार पर्यावरणीय आचरण को आस्था के स्तर पर स्वीकार्य बनाकर जसनाथी साहित्य उसे समाज में स्थायी रूप से स्थापित करने का प्रयास करता है।

वृक्षों के प्रति सम्मान जसनाथी साहित्य में पर्यावरण बोध का एक प्रमुख प्रतीक है। मरुस्थलीय क्षेत्र में वृक्षों का महत्व केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। जसनाथी साहित्य में वृक्षों की रक्षा को जीवन की रक्षा के समकक्ष माना गया है। वृक्ष को केवल लकड़ी या छाया का स्रोत न मानकर जीवनदायी शक्ति के रूप में देखा गया है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से साहित्य यह संदेश देता है कि वृक्षों का विनाश केवल पर्यावरणीय हानि नहीं, बल्कि नैतिक पतन भी है (Bahadur *et al.*,2024) ।

जल संरक्षण का प्रश्न जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में अत्यंत गंभीरता से उभरता है। मरुस्थलीय जीवन में जल की प्रत्येक बूँद का महत्व होता है और यही कारण है कि जसनाथी साहित्य में जल के अपव्यय के प्रति कठोर चेतावनी दिखाई देती है। जल को केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि पवित्र तत्व के रूप में देखा गया है। यह पवित्रता जल के प्रति संयम और सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार जल संरक्षण यहाँ किसी तकनीकी प्रबंधन का विषय नहीं, बल्कि नैतिक आचरण का अनिवार्य अंग बन जाता है।

पशुओं के प्रति करुणा और संरक्षण भी जसनाथ सम्प्रदाय के पर्यावरण बोध का महत्वपूर्ण पक्ष है। पशु-हत्या का निषेध केवल धार्मिक निषेध नहीं, बल्कि जीवन के प्रति करुणा और सहअस्तित्व की भावना का विस्तार है। जसनाथी साहित्य में पशुओं को मानव जीवन के सहयोगी के रूप में देखा गया है, न कि केवल उपयोग की वस्तु के रूप में (Zaidi *et al.*,2008) । यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में सहायक होता है, क्योंकि पशु और मानव के बीच संतुलित संबंध ही स्थायी पारिस्थितिकी का आधार होता है।

जसनाथी साहित्य में पर्यावरण बोध का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह व्यक्तिगत आचरण और सामुदायिक उत्तरदायित्व दोनों को समान महत्व देता है। पर्यावरण संरक्षण को केवल सामूहिक प्रयास तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से यह साहित्य आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता के सिद्धांतों से मेल खाता है, जहाँ व्यक्तिगत जीवनशैली और उपभोग के पैटर्न को पर्यावरणीय संकट का मूल कारण माना जाता है।

समकालीन संदर्भ में जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य का पर्यावरण बोध अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। आज का विश्व जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों के अति-उपयोग और जैव विविधता के क्षरण जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान केवल तकनीकी उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए नैतिक दृष्टिकोण और जीवनशैली में परिवर्तन आवश्यक है (Singh *et al.*,2012) । जसनाथी साहित्य इसी प्रकार के नैतिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह साहित्य विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन की बात करता है, जो आधुनिक सतत विकास की अवधारणा का मूल आधार है। जसनाथी दृष्टिकोण में विकास का अर्थ प्रकृति का दोहन नहीं, बल्कि उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए प्रकृति की सीमाओं का सम्मान करना इस साहित्य का केंद्रीय संदेश है। इस प्रकार जसनाथ सम्प्रदाय का पर्यावरण बोध आधुनिक विकास मॉडल की आलोचना करते हुए एक वैकल्पिक और संतुलित जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में पर्यावरण बोध कोई पृथक विषय नहीं, बल्कि उसकी संपूर्ण वैचारिक संरचना का अभिन्न अंग है (Arshad *et al.*,2019) । यह बोध लोकचेतना और सामाजिक नैतिकता के साथ अंतर्संबद्ध है और जीवन को एक समग्र पारिस्थितिक इकाई के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। जसनाथी साहित्य इस अर्थ में केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में भी एक महत्वपूर्ण वैचारिक मार्गदर्शक है।

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य पर्यावरण को बचाने का केवल संदेश नहीं देता, बल्कि एक ऐसी जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन, सम्मान और सहअस्तित्व को जीवन का अनिवार्य मूल्य माना गया है। यही पर्यावरण बोध इस साहित्य को समकालीन सामाजिक-पर्यावरणीय विमर्श में विशिष्ट और प्रासंगिक बनाता है।

सामाजिक सुधार की चेतना

जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य भारतीय संत परंपरा में सामाजिक सुधार की चेतना का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह साहित्य समाज की केवल आलोचना ही नहीं करता, बल्कि उसे नैतिक रूप से पुनर्गठित करने की दिशा में मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। जसनाथी साहित्य में सामाजिक सुधार का स्वर किसी तीव्र राजनीतिक विद्रोह या बाह्य आंदोलन के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक अनुशासन, आत्मसंयम और सामूहिक उत्तरदायित्व के माध्यम से उभरता है (Bahadur *et al.*,2024)। यही कारण है कि इसकी सामाजिक सुधारक भूमिका गहरी, स्थायी और व्यवहारिक प्रतीत होती है।

जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में सामाजिक सुधार की चेतना का पहला और प्रमुख आयाम सामाजिक असमानताओं की आलोचना है। जातिगत भेदभाव, ऊँच-नीच की भावना और सामाजिक वर्चस्व को इस साहित्य में मानवता के विरुद्ध माना गया है। हालाँकि जसनाथी साहित्य किसी प्रत्यक्ष राजनीतिक भाषा का प्रयोग नहीं करता, फिर भी इसकी नैतिक दृष्टि सामाजिक विभाजन की जड़ों पर प्रहार करती है। यह साहित्य मनुष्य को उसकी जाति या सामाजिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि उसके आचरण और नैतिक मूल्यों के आधार पर मूल्यांकित करता है। इस प्रकार यह समानता की अवधारणा को सामाजिक जीवन का मूल सिद्धांत बनाता है।

हिंसा के प्रति जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य स्पष्ट और दृढ़ दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। हिंसा को केवल शारीरिक कृत्य तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि उसे मानसिक, सामाजिक और नैतिक स्तर पर भी एक विनाशकारी प्रवृत्ति के रूप में देखा गया है। जसनाथी साहित्य करुणा, सहिष्णुता और संयम को हिंसा के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है। यह दृष्टि सामाजिक सुधार को दंड और भय के माध्यम से नहीं, बल्कि नैतिक संवेदनशीलता और आत्मबोध के माध्यम से साकार करने का प्रयास करती है।

नशाखोरी और अनैतिक आचरण की आलोचना जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में सामाजिक सुधार का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है। नशा केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि परिवार और समाज की संरचना को भी प्रभावित करता है (Reading *et al.*,2019)। जसनाथी साहित्य नशाखोरी को नैतिक पतन और सामाजिक विघटन का कारण मानता है। इसके विरुद्ध प्रस्तुत विचार केवल उपदेशात्मक नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति को अपने आचरण के सामाजिक परिणामों का बोध कराते हैं। इस प्रकार सामाजिक सुधार यहाँ व्यक्तिगत आत्मसंयम से आरंभ होकर सामुदायिक स्थिरता तक पहुँचता है।

जसनाथी साहित्य में सामाजिक सुधार की चेतना का स्वर केवल निषेधात्मक नहीं है, बल्कि वह सकारात्मक सामाजिक मूल्यों की स्थापना पर भी बल देता है। समानता, करुणा, संयम और सहयोग जैसे मूल्य इस साहित्य में सामाजिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत होते हैं। ये मूल्य किसी अमूर्त नैतिक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के व्यवहारिक मानकों के रूप में सामने आते हैं। जसनाथी साहित्य यह संकेत देता है कि सामाजिक सुधार का वास्तविक आधार व्यक्ति के आचरण में निहित होता है, न कि केवल बाहरी सामाजिक संरचनाओं में।

सामाजिक सुधार की यह चेतना केवल वैचारिक स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जसनाथी परंपरा में व्यवहारिक रूप भी ग्रहण करती है। सामूहिक अनुशासन इस परंपरा का एक केंद्रीय तत्व है। समाज में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण के लिए केवल स्वयं के प्रति नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के प्रति उत्तरदायी माना जाता है (Jamal *et al.*,2022)। यह सामूहिक उत्तरदायित्व सामाजिक सुधार को स्थायी और प्रभावी बनाता है, क्योंकि इसमें नैतिक नियम केवल बाहरी नियंत्रण का साधन नहीं, बल्कि सामुदायिक चेतना का स्वाभाविक हिस्सा बन जाते हैं।

नैतिक आचरण पर विशेष बल जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य को अन्य सामाजिक सुधार आंदोलनों से अलग पहचान प्रदान करता है। यहाँ नैतिकता किसी दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका अनुप्रयोग अपेक्षित होता है। पारिवारिक संबंध, सामाजिक व्यवहार, आर्थिक गतिविधियाँ और पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण, सभी में नैतिक संयम और उत्तरदायित्व की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार सामाजिक सुधार एक समग्र जीवन-दृष्टि के रूप में उभरता है।

जसनाथी साहित्य में सामाजिक सुधार की चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह सुधार को बाह्य दबाव या दंड के माध्यम से नहीं, बल्कि आंतरिक नैतिक परिवर्तन के माध्यम से साकार करने पर बल देता है। व्यक्ति के भीतर विवेक और आत्मबोध का जागरण सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला माना गया है। यह दृष्टिकोण संत परंपरा की उस मूल भावना के अनुरूप है, जिसमें समाज के परिवर्तन को व्यक्ति के नैतिक उत्थान से जोड़ा गया है।

समकालीन संदर्भ में जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य की सामाजिक सुधारक चेतना और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। आज का समाज सामाजिक असमानता, हिंसा, नैतिक विचलन और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है (Kumari *et al.*,2021)। ऐसे समय में जसनाथी साहित्य में निहित संयम, करुणा और सामुदायिक उत्तरदायित्व के विचार सामाजिक संतुलन की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह साहित्य आधुनिक समाज को यह स्मरण कराता है कि सामाजिक सुधार केवल नीतिगत परिवर्तनों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए नैतिक चेतना का विकास अनिवार्य है।

यह भी उल्लेखनीय है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य सामाजिक सुधार को किसी विशिष्ट वर्ग या समूह तक सीमित नहीं करता। इसकी नैतिक दृष्टि सार्वभौमिक है और समाज के प्रत्येक सदस्य को संबोधित करती है। इस प्रकार यह साहित्य सामाजिक सुधार को सामूहिक प्रयास के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जसनाथ सम्प्रदाय के साहित्य में सामाजिक सुधार की चेतना उसकी संपूर्ण वैचारिक संरचना का अभिन्न अंग है। यह चेतना लोकचेतना और पर्यावरण बोध के साथ अंतर्संबद्ध होकर एक ऐसी समग्र जीवन-दृष्टि का निर्माण करती है, जिसमें समाज,

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

व्यक्ति और प्रकृति एक-दूसरे से पृथक नहीं, बल्कि परस्पर आश्रित हैं (Singh *et al.*,2012)। जसनाथी साहित्य समाज में नैतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है और यह स्थापित करता है कि स्थायी सामाजिक सुधार का आधार केवल बाहरी संरचनाओं में नहीं, बल्कि मनुष्य के नैतिक विवेक और आचरण में निहित होता है।

इस प्रकार जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य सामाजिक सुधार के संदर्भ में न केवल अतीत की एक ऐतिहासिक धारा है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक महत्वपूर्ण वैचारिक मार्गदर्शक के रूप में उभरता है। यही इसकी सामाजिक प्रासंगिकता और स्थायित्व का मूल आधार है।

परिणाम

अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार को एक समन्वित दृष्टिकोण में प्रस्तुत करता है। विश्लेषित ग्रंथों और रचनाओं में इन तीनों आयामों की आवृत्ति और महत्व को मात्रात्मक रूप में निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: जसनाथी साहित्य में विषयगत आयामों की आवृत्ति

विषयगत आयाम	विश्लेषित रचनाओं में उल्लेख की संख्या	कुल प्रतिशत (%)
लोकचेतना	42	35
पर्यावरण बोध	38	32
सामाजिक सुधार	40	33

तालिका से स्पष्ट है कि जसनाथी साहित्य में तीनों आयाम लगभग समान महत्व रखते हैं, जो इसकी समग्र सामाजिक-पर्यावरणीय दृष्टि को रेखांकित करता है (Zaidi *et al.*,2008) ।

चर्चा

परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य किसी एक विषय तक सीमित नहीं है। लोकचेतना, पर्यावरण बोध और सामाजिक सुधार एक-दूसरे से अंतर्संबद्ध हैं। लोकचेतना सामाजिक सुधार की आधारशिला बनती है, जबकि पर्यावरण बोध जीवन की नैतिकता को प्रकृति से जोड़ता है।

यह साहित्य आधुनिक पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताओं के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। इसमें निहित विचार सतत जीवनशैली, सामुदायिक उत्तरदायित्व और नैतिक विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत करता है कि जसनाथ सम्प्रदाय का साहित्य भारतीय संत परंपरा में एक महत्वपूर्ण सामाजिक-पर्यावरणीय विमर्श है। यह लोकचेतना को जाग्रत कर समाज में नैतिकता और समरसता स्थापित करता है, पर्यावरण बोध के माध्यम से प्रकृति संरक्षण को जीवन का अनिवार्य अंग बनाता है और सामाजिक सुधार की दिशा में व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार जसनाथी साहित्य न केवल ऐतिहासिक या धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि समकालीन सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में भी एक वैचारिक संसाधन के रूप में उभरता है। भविष्य के शोधों में इसके तुलनात्मक अध्ययन द्वारा भारतीय और वैश्विक पर्यावरणीय आंदोलनों के साथ इसके संबंधों को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ

1. Zaidi SIA. दक्षिण एशिया में लोकप्रिय साहित्य और पूर्व-आधुनिक समाज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008. p.101–118.
2. Bahadur E. संकरता में पहचानें: बीकानेर क्षेत्र का जसनाथ सम्प्रदाय और राजस्थान में इस्माइली परंपरा. Indian Historical Review. 2024;51(1):55–78.
3. Hooja R. प्रतीक, पुरावस्तुएँ और अतीत की व्याख्याएँ: राजस्थान में प्रारंभिक हिंदू धर्म. World Archaeology. 2004;36(2):215–232.
4. Jamal MT, Khan AZ. बाबा फ़रीद की काव्य परंपरा. Islamic Studies. 2022;61(3):287–305.
5. Jamal MT, Khan AZ. बाबा फ़रीद की कविता: एक ऐतिहासिक और विषयगत विश्लेषण. Islamic Studies. 2022;61(4):321–340.
6. Zaidi SIA. लोककथा, सामान्य जन और सामाजिक स्मृति का निर्माण. In: दक्षिण एशिया में लोकप्रिय साहित्य और पूर्व-आधुनिक समाज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008. p.145–162.
7. Kumari MR, Gwala MK. राजस्थान में योग पर्यटन की संभावनाएँ, परिदृश्य और चुनौतियाँ: एक संकल्पनात्मक ढाँचा. Recent Trends in Tourism and Hospitality. 2021;5(1):67–85.
8. Abdullah J. बंगाल और लोकप्रिय साहित्यिक परंपराओं का संचरण. In: दक्षिण एशिया में लोकप्रिय साहित्य और पूर्व-आधुनिक समाज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008. p.189–205.
9. Singh DE. आधुनिक दक्षिण एशिया में इस्लामीकरण: देवबंदी सुधार और गुज्जर समुदाय की प्रतिक्रिया. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान; 2012. p.1–245.
10. Kothari A, Anuradha RV. जैव विविधता, बौद्धिक संपदा अधिकार और GATT समझौता: संघर्षों का समाधान कैसे किया जाए? Economic and Political Weekly. 1997;32(45):2953–2961.
11. Zaidi S. मौखिक परंपरा और लघु संस्कृति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जसनाथी. In: दक्षिण एशिया में लोकप्रिय साहित्य और पूर्व-आधुनिक समाज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008. p.201–223.
12. Luthy T. गंगा के तट पर भजन: भक्ति-अभ्यास के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता में वृद्धि. Journal of Dharma Studies. 2019;2(2):145–162.
13. Arshad V. लोककथा और पर्यावरण: केरल की लोक मौखिक परंपरा में परिलक्षित विश्व-दृष्टि का विश्लेषण [PhD thesis]. तिरुवनंतपुरम: University of Calicut; 2019. p.1–210.

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

14. Reading M. अनुव्रत आंदोलन: जैन-प्रेरित नैतिक एवं पर्यावरण-सचेत जीवन पर एक अध्ययन. Religions. 2019;10(7):401–418.

आधार ग्रंथ (Primary Sources)

15. सूरज नाथ. श्री जसनाथ आन्तर पंचाल सिद्ध का संक्षिप्त परिचय. स्थान अज्ञात: प्रकाशक अज्ञात; वर्ष अज्ञात.
16. पारिक एसएन. शब्द धुंध. बीकानेर: निजी प्रकाशन; 1886.
17. पारिक एसएस. सिद्ध जसनाथ जी रो सिसलोकों. बीकानेर: निजी प्रकाशन; 1975.
18. पारिक एसडी. सिद्ध चरित्र. बीकानेर: निजी प्रकाशन; 2012.
19. स्वामी सोमानाथ जी महाराज. गुणमाला ज्ञान विवेणी. बीकानेर: निजी प्रकाशन; 1975.

सहायक ग्रंथ (Secondary Sources)

20. सिंगारिया आर. मध्य कालीन संत विचार: हिंदी साहित्य पर उनका प्रभाव. जयपुर: साहित्य भवन; 1963.
21. विजन ए. आधुनिक भारतीय संत तथा धर्माचार्य. नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन; 1990.
22. प्रसून आरपी. संत कवियों में पर्याय सत्ताओं का स्वरूप. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ; 1968.
23. माली बीएल. राजस्थान साहित्य का मध्यकाल. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी; 1994.
24. सिंहल बीके. राजस्थान के संत और उनका साहित्य. जयपुर: साहित्य अकादमी; 2013.
25. मेघवाल एम. राजस्थान का पिंगल साहित्य. बीकानेर: साहित्य संस्थान; 2006.
26. मेघवाल एम. राजस्थान भाषा और साहित्य. बीकानेर: साहित्य संस्थान; 2014.
27. सिंह आर. संत साहित्य का पुनर्मूल्यांकन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1998.
28. गौतम आरवी. मध्यकालीन संत साहित्य. इलाहाबाद: लोकभारती; 1965.
29. दाथोरिया आरपी. राजस्थान के संत कवियों के दर्शन एवं उनकी लोकमाधुर्यता. जयपुर: साहित्य भवन; 2015.
30. नागर ए. अगस्त्य साहित्य संदेश. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1995.
31. कापुर वी. हिंदी संत साहित्य के स्रोत. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2004.
32. शर्मा एच. मध्यकालीन निर्गुण-भक्ति साधना. जयपुर: साहित्य अकादमी; 1997.

अप्रकाशित शोध / थीसिस

33. भैराराम. जसनाथी संप्रदाय: साहित्य, साधना एवं विचारधारा [PhD thesis]. जोधपुर: जयनारायण विश्वविद्यालय; 2022.
34. नत्थूजी. राजस्थान में अग्नि आंदोलन और जसनाथी संप्रदाय: एक अध्ययन [PhD thesis]. उदयपुर: मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय; 2022.
35. गुप्ता वी. जसनाथ जी, जसनाथी साहित्य का शोधात्मक अध्ययन [PhD thesis]. कोलकाता: कोलकाता विश्वविद्यालय; 1984.
36. नथिवाद आरआर. जसनाथ जी, जसनाथी संप्रदाय अर साहित्य [PhD thesis]. जोधपुर: जयनारायण विश्वविद्यालय; 2015.

पत्रिकाएँ

37. मीरणगर. सत्यानंदायत समभावनी. चित्तौड़गढ़; वर्ष अज्ञात.
38. प्रतापसिंह. बिज रतन जीबी. उदयपुर: साहित्य अकादमी; वर्ष अज्ञात.
39. धर्मानंद. ओंकारसिंह किसनगिरी. उदयपुर; वर्ष अज्ञात.
40. राष्ट्रराजस्थान. सुखदेव राव. उदयपुर; वर्ष अज्ञात.

साक्षात्कार (Personal Communication)

41. लालनाथ जी. पूनरासर; 2022. Personal communication.
42. सूरजनाथ जी. पंछला सिद्ध; 2022. Personal communication.
43. जोलनाथ जी. डूंगर; 2022. Personal communication.
44. किशननाथ जी. बिलाड़ेसर; 2022. Personal communication.

इंटरनेट स्रोत (Web Sources)

45. Wikipedia Hindi. Available from: http://hi.in.wikipedia.org
46. Jasnathasan. Available from: www.jasathasan.org
47. Hindi Study Material. Available from: www.hpahindistudymatarialar.in
48. Hindi Grammar. Available from: www.hindigramar.in
49. Hrisran. Available from: www.hrisran.com

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

About the corresponding author

Mahesh Choudhary is a Research Scholar in the Department of Hindi, Faculty of Language and Literature, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad, India. His academic interests focus on Hindi literature, language studies, and literary criticism, with a keen engagement in research, writing, and scholarly analysis.

© 2025 Mahesh Choudhary, Dr. Geljibhai Bhatiya. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/